

The SQUAT Survey is a scientific study conducted in over 3,200 households and over 300 villages in 13 districts of rural Bihar, Haryana, Madhya Pradesh, Rajasthan, and Uttar Pradesh. We found:

40% of households with working latrines have at least one member who defecates in the open. More than half the people who have government latrines don't use them.

Among those who defecate in the open, 47% say they do so because it is pleasurable, comfortable or convenient. Toilet use is often considered optional, not an urgent need.

51% of those who defecate in the open report that widespread open defecation would be at least as good for child health as latrine use.

People want expensive latrines: most families in rural India can already afford to buy the simple latrines that save lives in Bangladesh.



ending open defecation requires changing minds



Latrine construction is not enough when many people in rural India prefer to defecate in the open. Building latrines won't work if people don't use them.



क्या आप शौचालय के इस्तेमाल की क्रांति का हिस्सा हैं?

स्कवैट सर्वे – सैनीटेशन क्वालिटी, यूज़, एक्सेस और ट्रेंड – शौचालय की गुणवत्ता, उपयोग, सुविधा और बढ़त – एक वैज्ञानिक शोध है जिसे बिहार, हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के 300 से ज्यादा गाँवों में 3500 से ज्यादा परिवारों के साथ किया गया।

जिनके पास एक चालू लैट्रीन है उन परिवारों में 40% परिवार ऐसे हैं जिनमें कम से कम एक सदस्य बाहर खुले में शौच जाता है। उन लोगों में जिनके पास एक सरकारी लैट्रीन है, उन परिवारों में आधे से भी ज्यादा उस लैट्रीन का इस्तेमाल नहीं करते हैं।

खुले में शौच जाने वाले लोगों में 47% लोगों ने बताया कि बाहर जाना आनंददायक, आरामदायक और सुविधाजनक है। लैट्रीन के इस्तेमाल को ज़रूरी नहीं, पसंद की बात समझा जाता है।

खुले में शौच जाने वाले लोगों में 51% लोगों ने कहा कि खुले में शौच जाना और लैट्रीन का इस्तेमाल करना बच्चों की सेहत के लिए बराबर लाभदायक है।

लोग महँगी लैट्रीन चाहते हैं: ग्रामीण भारत के ज्यादातर परिवार एक आम छोटे गढ़दे वाली लैट्रीन, जो बांग्लादेश में लोगों की जान बचाती हैं, अगर बनाना चाहें तो आसानी से बना सकते हैं।



अगर मिटाना है खुले में शौच,
तो बदलनी होगी **लोगों की सोच**



लैट्रीन बनाना काफी नहीं है क्योंकि ग्रामीण भारत में बहुत से लोग खुले में शौच जाना पसंद करते हैं। लैट्रीन बनाने का कोई फायदा नहीं अगर लोग उसे इस्तेमाल न करें।

SQUAT survey



sanitation quality,
use, access, & trends

www.squatreport.in